रामाख्यानक परंपरा में श्रीमंत शंकरदेव की कृतियों का मूल्यांकन

प्रो. दिनेश चौबे

भारतीय साहित्य में प्राचीनकाल से ही राम और रामाख्यानकों का महत्व मान्य है। रामाख्यान भारतवासियों का युगों-युगों से उचित मार्गदर्शन करते आये हैं। इसीलिए युगानुरूप निरंतर नव-नव रामाख्यान विभिन्न भाषाओं की विभिन्न विधाओं में रचना होती रही है। रामकथा का मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। इसी के आधार पर आधुनिक भाषाओं में सैंकड़ों रामायणें रची गई हैं। मध्ययुगीन भारतीय भक्ति आंदोलन में रामाख्यान और रामचरित को सर्वथा नवीन गति मिली थी। उसी के फलस्वरूप राम के ईश्वरत्व के प्रत्यक्षीकरण के लिए अनेक रामायणों की रचनाएँ विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हुई। असमिया के प्रथम रामायणकार माधवकंदली का रचनाकाल भक्ति-आंदोलन की पूर्ववर्ती सीमा पर पड़ता है। इस रामायण का मूलाधार वाल्मीकि रामायण को सप्तकाण्डात्मक रूप प्रदान करने में प्रधान भूमिका महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव की है, जिन्होंने माधवदेव को प्रेरित कर कंदली के 'आदिकाण्ड' की रचना करायी और स्वयं 'उत्तरकाण्ड' रचा। संस्कृतेतर भाषाओं में असमिया रामायण का स्थान सर्वप्रथम है। यहाँ रामाख्यानक परंपरा का परिचय प्रस्तुत कर श्रीमंत शंकरदेव की रामाख्यानक कृतियों के महत्व को निरूपित करना उद्देश्य है।

रामाख्यानक काव्य की विकास-परंपरा उसकी सुदीर्घता एंव व्यापकता के संदर्भ में ही विवेचित की जा सकती है। रामाख्यान भारतीय संस्कृति में इतने व्यापक रूप में फैले कि तत्कालीन प्रचलित तीनों धर्मो में अपनी लोकप्रियता के कारण एक निश्चित स्थान बना लिया। राम सनातन धर्म में विष्णु के अवतार, बौद्धधर्म में बोधिसत्व और जैन धर्म में आठवें बलदेव के रूप में स्वीकृत हुए। परवर्ती काल में संस्कृत के धार्मिक साहित्य, ललित साहित्य की प्रत्येक शाखा में, अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यों में और भारत के निकटवर्ती देशों के साहित्यों में रामकथा महत्वपूर्ण स्थान पा सकी है रामकथा - "साहित्य की विस्तृति से इसकी लोकप्रियता एवं व्यापकता स्वतः सिद्ध हो जाती है।" [1] रामाकथा का मूल स्रोत वाल्मीकि - रामायण होते हुए भी वेदों में रामकथा के कुछ पात्रों का उल्लेख मिलता है जिनके आधार पर विकास-परंपरा में वैदिक लोकगाथाओं का उल्लेख किया जा सकता है। रामकथा का कोई सम्यक् रूप वेदों में प्राप्त नहीं होता। ऋग्वेद, यजुर्वेद, आदि में इक्ष्वांकु, राम, सीता, वशिष्ठ, विश्वामित्र, जनक आदि का उल्लेख मिलता है। रामकथा का सम्यक रूप सर्वप्रथम वाल्मीकि कृत रामायण ही माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि, "रामकथा की लोकप्रियता को देखकर ही वाल्मीकि ने उसे आदिकाव्य का रूप प्रदान किया। रामकथा कालांतर में मौखिक होने के कारण वृद्धि पाती गयी।"[2] रामकथा की दृष्टि से वाल्मीकि- रामायण प्राचीनतम् ग्रंथ है। भारतीय परंपरा वाल्मीकि को आदिकवि और उनके द्वारा रचित्त रामायण को आदिकाव्य मानती है। इसका रचनाकाल अनिश्चित है। इस रामायण के तीन पाठ - दक्षिणात्य, गौड़ीय और पश्चिमोत्तरीय मिलते हैं जिनमें किंचित विभिन्नता पायी जाती है। रामकथा महाभारत में भी पायी जाती है। इसके मुख्यतः आरण्यक पर्व और शांति पर्व के अंतर्गत रामोपाख्यान मिलता है। महाभारत के पश्चात

रामकथा का विस्तार विभिन्न रूपों में मिलता है। एक ओर वह वेदसम्मत धार्मिक साहित्यों-पुराणों-आगमों आदि में वर्णित है वहीं संस्कृत के ललित साहित्य में उसे विस्तार मिला है।

दूसरी ओर बाह्य बौद्ध और जैन साहित्यों में भी रामकथा के लिए अनेक पृष्ठ सुरक्षित हो उठते हैं। बौद्ध ग्रथों में रामकथा को जातक, अनामक जातक साहित्य में स्थान दिया गया है। तीन जातकों दशरथ जातक, अनामक जातक और दशरथ कथानम में दशरथ जातक अधिक प्रसिद्ध है। जैनियों ने रामकथा के पात्रों को अपने धर्म में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। राम, लक्ष्मण और रावण का स्थान त्रिषष्ठि पुरुषों में है, क्रमशः वे आठवें बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव के रूप में स्वीकृत हैं।"[3] जैन ग्रंथों में रामकथा की दृष्टि से दो ग्रंथ उल्लेखनीय है- विमलसूरी कृत पउमचरिउ और गुणभद्र कृत उत्तरपुणम्।

समान उद्देश्य से लिखे गये अठारह पुराणों का होना इस बात का प्रमाण है कि सबमें दृष्टि भेद विद्यमान रहा। विभिन्न पुराणों में विभिन्न संप्रदायों का प्रभाव भी परिलक्षित है। हरिवंश पुराण, मत्स्यपुराण, कूर्मपुराण, विष्णुपुराण, नारदीय महापुराण, स्कन्द महापुराण, शिव महापुराण, भागवतपुराण आदि में राम के विभिन्न रूपों का वर्णन हुआ है। उदाहणार्थ स्कन्द महापुराण में राम को पूर्णत; शिव भक्त बना दिया है तो श्रीमद देवीभागवत पुराण, कालिका पुराण आदि में राम बिना शक्ति की कृपा के कोई भी सफलता न पा सके। सांप्रदायिक रामायणों के अंतर्गत योगवाशिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अदभूत रामायण, आनन्द रामायण, तत्व संग्रह रामायण आदि प्रमुख हैं। संग्रह रामायण आदि प्रमुख हैं। संस्कृत महाकाव्यों के अंतर्गत रघुवंश (कालिदास), रावणवध (भट्ट) आदि

उल्लेखनीय हैं। संस्कृत नाटकों में प्रतिमा, अभिषेक, महावीर चरित आदि रामकथा के विकास की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। विभिन्न प्रांतीय भाषाओं की रामायणों में असमिया में माधव कंदली कृत रामायण, ओडिया में सारलादास का रामायण, बलरास का रामायण, बंगला में कृतिवासी रामायण, तमिल में कम्बन-रामायण, तेलुगु में रंगनाथ-रामायण, भास्कर- रामायण, गुजराती में भलन का रामबाललीला, नेपाली में भानुभक्त-अध्यात्म रामायण, कश्मीरी में प्रकाश-रामायण, पंजाबी में गुरुगोविन्द सिंह का रामावतार, मराठी में एकनाथ का भावार्थ-रामायण, मलयालम में रामायण- चम्पू एंव रामचरितम् आदि उल्लेखनीय हैं। यहीं पर हिंदी की प्रमुख रामायणों का उल्लेख प्रासंगिक हैं- चन्दबरदाई-अथ दशम (पृथ्वीराज रासो का द्वितीय), रामानन्द के दो पद, विष्णुदास- रामायणकथा, सूरजदास-रामजन्म, साईंदास-रामावतार चरित, सूरदास-रामचरित (सूर सरावली), माघवदास जगन्नीथी- रघुनाथ लीला, पुरुषोत्तम दास-कुशलवोपाख्यान, ईश्वरदास-रामावतार (हरिरस) परशुराम देवाचार्य- रघुनाथ चरित एवं सवैया दशावतार और सर्वाधिक लोकप्रिय तुलसीदास का रामचरित मानस, विनय पत्रिका आदि उल्लेखनीय हैं।

रामकाव्य-परंपरा की संक्षिप्त चर्चा के पश्चात् असमिया भाषा के महान कवि महापुरुष शंकरदेव की रामाख्यानक कृतियों का उल्लेख अभीष्ट हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि असमिया में लगभग 14.00 ई. माधव कंदली ने 'पंचकाण्ड रामायण' की रचना कर संस्कृतेतर भाषाओं में सर्वप्रथम रामायण रचने का ऐतिहासिक कार्य किया। कछरियों की बाराही शाखा के सोनापुर नरेश महामाणिक्य के अनुरोध पर उनके राज्याश्रित कवि कंदली ने रामायण की रचना कर असमिया साहित्य के गौरव को बढ़ाया कालांतर मे असम में वैष्णव भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव ने स्वयं उत्तरकांड रचकर और अपने प्रिय शिष्य माधवदेव से आदिकांड की रचना कराकर माधव कंदली कृत रामायण को सप्तकाण्डात्मक रूप प्रदान कर 'कंदली-रामायण' को भक्ति काव्य का स्वरूप प्रदान किया। महापुरुष शंकरदेव (सन् 1449-1568 ई.) महान कवि, भक्त, समाज सुधारक और संप्रदाय प्रवर्तक हैं। इसमें संबंध में अनेक चरित काव्य लिखे गये है। प्रायः सभी विद्वान इनका जीवन-काल सन् 1449-1568 ई. मानते है। महापुरुष ने बाल्यावस्था में अल्पकाल में ही व्याकरण, काव्य कोश, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों का अध्ययन कर लिया। पत्नी के स्वर्गवासी हो जाने पर संसार से वैराग्य लेकर तीर्थाटन के दौरान वे गया, पूरी, वृन्दावन, मथुरा, काशी, प्रयाग, सीताकुण्ड, बराह-कुण्ड, अयोध्या, बद्रीनाथ आदि तीर्थों का भ्रमण करते हुए अनेक साधु-संतों के संपर्क में आये। उस दौरान उन्होंने अनेक वैष्णव आचार्यों के साथ विचार-विमर्श किया। भ्रमण-काल में जो उन्हें भारतवर्षो की विविधता, अनेकता, विराटता लिए एकता का प्रत्यक्षीकरण हुआ, वहीं जगत की अनंतता और विष्णु-राम-कृष्ण की विराटता और सर्वशक्तिमान की प्रतिमूर्ति बनी। वे अपने साथ अनेक विचार-दर्शन लेकर लौटे। महापुरुष शंकरदेव ने अपने व्यक्ति-चारिन्न और सामाजिक ऊर्जा के कारण। लोकप्रियता प्राप्त कर धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक गुरुपद को प्राप्त किया। उनके द्वारा प्रचारित 'एक शरणीया धर्म' काफी लोकप्रिय हुआ। श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित रामाख्यान से संबंधित महत्वपूर्ण रचनाएं हैं- उत्तरकाण्ड रामायण और रामविजय नाट। यहाँ इन कृतियों की रामकाव्य परंपरा के संदर्भ में विवेचन प्रासंगिक होगा।

उत्तरकाण्ड रामायण

"इसका रचना काल सन् 1552-1560 के बीच माना जाता है।"[4] इसमें कुल 762 पद है। 'कथा गुरुचरित' में उल्लेख है कि जब माधव कंदली कृत रामायण की अवहेलना कर अन्नत कंदली ने रामायण की रचना शुरू की तो स्वयं माधव कंदली ने अपनी रामायण की रक्षा के निमित्त शंकरदेव को स्वप्नादेश दिया। जिससे प्रेरित होकर श्रीमंत ने माधवदेब को 'आदिकाण्ड' की रचना का आदेश देकर स्वयं उत्तरकाण्ड की रचना की। उत्तरकाण्ड की कथा का आधार वाल्मीकि रामायण है। स्वयं कवि ने इसे 'उत्तरकाण्ड सार' कहा है। यह कृति वाल्मीकि रामायण का अनुवाद नहीं वरन् एक मौलिक रचना है। यह अधिक सुसम्बद्ध, सुगठित और काव्यमय है। इसमें कवि ने कई प्रसंगों का त्याग कर और कई प्रसंगों के उल्लेख मात्र से कथानक के संघढ्न पर ध्यान दिया है। उदाहरण के लिए शम्बूक वध, गीध-उलूक विवाद जैसे प्रसंग त्याग दिये गये हैं तो राक्षसोत्पत्ति एवं रावण वध जैसे प्रसंगों का मात्र उल्लेख कर दिया गया है। मार्मिक प्रसंगों के सजीव वर्णन के कारण रचना काव्यमयी हो सकी है। इसी दृष्टि से सीता का पाताल- प्रवेश उल्लेखनीय

है। प्रसंग विशेष में रचनाकार ने सीता- वनवास के दो कारणों का उल्लेख किया है-सीता का स्वप्न (छन्द 6727-29) और लोकोपवाद (छन्द 6730-33) । जबकी माधव कंदली कृत रामायण में तारा द्वारा राम को अभिशापित करने को (छन्द 3664-67) सीता-वनवास का कारण माना गया है। इस रचना में कवि का उद्देश्य उनकी महापुरुषिया वैष्णव मत का प्रवर्तन करना माना जा सकता है। "नाम-धर्म का प्रचार कवि का उद्देश्य प्रतीत होता है"[5] कवि के 'अनुसार हरिनाम का सर्वदा स्मरण करना चाहिए क्योंकि हरिनाम ही कलियुग का परम धर्म है।'[6]

"उत्तरकाण्ड रामायण की पात्र योजना में कवि ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। सुशीलता, करुणा, वीरता आदि के साथ लोक भीरूता भी उनके चरित्र मे प्रत्यक्ष होती है। लक्ष्मण का चरित्र मूल रूप से आर्दश भ्राता, सेवक और विचारशील व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। सीता सतिव्रत्य का आर्दश, करुणा की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित है। सीता का सात्विक क्रोध एवं पाताल-प्रवेश के पूर्व स्वयं को अभागिनी घोषित करना उनके उदात्त चरित्र को दर्शाता है।''[7] 'ब्रजबुलि'[8] में रचित यह एक भक्तिपरक रचना है जो माधव कंदली की रामायण को पूर्णता प्रदान करने के साथ रामकाव्य परंपरा मे एक प्रौढ़कृति के रूप में स्वीकार्य है।

रामविजय नाट

यह 1568 ई. की रचना है। महापुरुष ने राम से संबंधित इस नाटक की रचना की है। यह कृति 'नाटक रामायण' के आदिकाण्ड की घटना-परंपरा के मेल से रचित है। इसकी कथावस्तु दशरथ के दरबार में विश्वामित्र के राम-लक्ष्मण को अपने आश्रम ले जाने के आगमन से प्रारंभ होकर सीता स्वयंवर के पश्चात् राम द्वारा परशुराम को शक्तिहीन कर सीता एवं लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापसी तक सीमित है। कवि ने वाल्मीकि रामायण से भिन्न कुछ मौलिक प्रसंगों को समाहित कर इस कृति को रोचक बना दिया है। विश्वामित्र द्वारा राम- लक्ष्मण के सम्मुख सीता के रूप-सौंदर्य का वर्णन सीता- स्वयंवर का वृतांत कथन, राजाओं का वीभत्स-आचरण राम-लक्ष्मण के साथ राजाओं का युद्ध, परशुराम-विश्वामित्र युद्ध आदि प्रसंग मूल रामायण में नहीं हैं किंतु श्रीमंत शंकरदेव द्वारा वर्णित इन मौलिक प्रसंगों के कारण आलोच्य नाटक की कथावस्तु आकर्षण एवं रोचक बन गयी हैं।

यह स्पष्ट है कि रामकाव्य परंपरा में असमिया रामाख्यानक कृतियों का ऐतिहासिक महत्व है। असमिया में रचित कंदली-रामायण भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्रथम रक्षा कवच है। महापुरुष शंकरदेव ने असमिया रामायण को सप्तकाण्डात्मक रूप प्रदान कर और रामकाव्य परंपरा के विकास में राम काव्य एवं नाटक लिखकर अपूर्व योगदान दिया है। कवि ने नाटक एवं काव्य दोनों विधाओं में रामकाव्य रचकर न केवल उत्तर पूर्वांचल के लिये राम काव्य का मार्ग प्रशस्त किया है वरन् पूरे भारतवर्ष के लिए भी एक आदर्श उपस्थित किया है। रामकाव्य की लोकप्रियता पूरे देश के साथ असम में भी अक्षुण्ण रही है।

शंकरदेव के पश्चात उनकी परंपरा में असमिया भाषा में कई रामाख्यानक कृतियों की रचनाएं हुई हैं। श्रीमंत शंकरदेव ने भारत की असम धरा पर जिस शाश्वत भारतीय साहित्य की रचना सदी पूर्व की, वह न केवल धार्मिक अपितु साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी अन्यतम उपलब्धि है।

संदर्भ

1. रामकथा, कामिल बुल्के, पृ. 721, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2. वही, पृ. 133-134

3. हिन्दी और असमिया की प्रथम रामायण, दिनेश कुमार चौबे, पृ. 11-12, संजय बुक सेण्टर, वाराणसी

4. असम प्रान्तीय राम साहित्य कृष्णनारायण प्रसाद ' मागध', पृ. 122, हिन्दी विकासपीठ, मेरठ

5. उत्तरकाण्ड, 'आउर घर्म कल्पित नामत परे नाइ।' छन्द 7390

6. उत्तरकाण्ड, 'कलित कीर्तन करि. सवे फल पावे।' छन्द 7391

7. उत्तराकाण्ड, 'तोमर चरण सेविले न पाइलों, मोरे से कर्म विपाक।' छन्द 7117

8. ब्रजबुलि-यह एक कृत्रिम भाषा है जिसमें असमिया लिपि में पूरा कंदलीकृत रामायण रचित है। इस भाषा में पूर्वी भारत और उत्तर भारत की भाषाओं के शब्दों के साथ संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है। पूरा मध्यकालीन असमिया का साहित्य इसी भाषा में मिलता है।